4

कलीसिया की मंशा के बाहर रहने वालों का एक विवरण

(2:1-3)

पौलुस ने कलीसिया के लिए उद्धार की परमेश्वर की मंशा के बाहर रहने वालों के दुखद विवरण के साथ इफिसुस के कुछ लोगों की बात की 2:1-3 में प्रेरित ने इफिसुस के लोगों को उनकी स्थिति का स्मरण करवाया जिसमें वे मसीह को जानने से पहले रहते थे।

पाप में मरे हुए (2:1)

[1]और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।

आयत 1. ''अपराधों,'' ''पापों'' संज्ञा शब्द हैं और एक-दूसरे के समानार्थी हैं-रोमियों 5:12-21 और कुलुस्सियों 1:14; 2:13 में इन अलग-अलग शब्दों को अदल-बदल कर (एक वचन और बहुवचन दोनों रूपों में) इस्तेमाल किया गया है। एक वचन में ''पाप'' का अर्थ पाप की वह सामर्थ है जो मानवीय परिवार पर अधिकार कर लेती है (देखें रोमियों 5—7); परन्तु इस आयत में बहुवचन रूप लोगों द्वारा किए जाने वाले पाप के कार्यों के लिए है।

यूनानी संज्ञा शब्द जिसका अनुवाद **पापों** हुआ है *hamartiai* (*hamartia* से) किया गया है जिसका अर्थ ''निशाना चूकना'' है।[1] पाप किसी तीरअंदाज़ के लक्ष्य पर तीर छोड़ने और चूक करने, चाहे आगे निशाना लगाकर या पीछे रहकर, या दूसरी ओर जाकर हो, दिखाया जाता है। वह कहता है, ''मैं निशाना चूक गया।'' नये नियम में ''पाप'' के लिए इस सबसे सामान्य शब्द है जिसका इस्तेमाल यूनानी धर्मशास्त्र में लगभग 175 बार मिलता है।[2]

अपराधों के लिए यूनानी संज्ञा शब्द *paraptōmasin* (*paraptōma* से) है। शब्द के क्रिया रूप की परिभाषा ''व्यक्ति या वस्तु के पास गिरना, एक ओर फिसलना, जिस कारण सही मार्ग से हटना, एक ओर मुड़ना, भटकना के रूप में की जाती है।''[3] पौलुस ने कहा कि इफिसुस के लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के निशाने से चूक गए थे और गिर गए थे, एक ओर फिसल गए थे और परमेश्वर के प्रकट किए गए वचन से हट गए थे। रोमियों 3:23 बताता है, ''सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।'' मनुष्य का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है और पाप और अपराध उसे इस उद्देश्य को पूरा करने से रोकते हैं। मसीह में विश्वासी पवित्र लोग बनने से पहले वे **मरे हुए थे** (देखें 1:1)। यह मृत्यु शारीरिक नहीं थी, क्योंकि वे मसीह में प्रवेश करने से पहले और बाद में भी शारीरिक रूप में जीवित थे। परन्तु मसीही बनने से पहले वे आत्मिक रूप में मरे हुए थे।

आत्मिक रूप में मरे हुए होने का क्या अर्थ है? प्राचीन काल के नबी ने कहा था, ''तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है'' (यशायाह 59:2)। ''अधर्म'' के लिए इब्रानी शब्द (*'awon*) का अर्थ है ''पाप, दोष ... गलती।''[4] पाप व्यक्ति को परमेश्वर से अलग करता है। ''मृत्यु'' ''जुदाई'' है जिसमें मनुष्य की आत्मा उसके शरीर से अलग हो जाती है (याकूब 2:26)। पाप के कारण परमेश्वर से अलग होने पर व्यक्ति आत्मिक रूप में मर जाता है। वह शारीरिक रूप में जीवित हो सकता है यानी वह किसी का पति हो सकता है और किसी का पिता, जो अपनी नौकरी पर प्रतिदिन काम करता है परन्तु यदि वह पाप में बना रहता है तो परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में वह मरा हुआ है। यदि व्यक्ति पाप में रहता और पाप में मर जाता है तो वह अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलग हो जाएगा क्योंकि ''पाप की मजदूरी मृत्यु है ...'' (रोमियों 6:23), यानी अनन्त मृत्यु।

अपराधों और पापों में मरे हुओं को बपतिस्मे में मसीह के साथ दफ़नाया जा सकता है। तब उसके साथ जिलाए जाकर उन्हें पापों की क्षमा मिलने के कारण जीवित किया जाता है (देखें कुलुस्सियों 2:12, 13)। इफिसुस के लोग मरे हुए थे परन्तु पौलुस उन्हें लिख रहा था क्योंकि उन्हें आत्मिक रूप में जिलाया गया था, जैसा कि इस अध्याय की शेष आयतों से स्पष्ट है। परमेश्वर ने ये काम उसी सामर्थ से किया था जो मसीह के जी उठने और ऊंचा किए जाने में दिखाई गई थी।

संसार के साथ चलना (2:2)

[2]जिस में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों के कार्य करता है।

आयत 2. इफिसुस के लोग जब अपने अपराधों और अपने पापों के कारण मरे हुए होने पर **संसार की रीति पर चलते थे**। ''चलते थे'' का अनुवाद क्रिया शब्द *peripateō* से किया गया है जिसका अर्थ ''जीना'' अपना जीवन चलाना, अपना आचरण दिखाना, किसी के व्यवहार को चलाना।[5]

''इस संसार की रीति'' का अनुवाद *aiōn,* ''रीति'' और *kosmos* ''संसार'' से किया गया है। *Aiōn* का अर्थ युग या समय के लिए,[6] और *kosmos* का अर्थ संसार के रहने वाले लोगों से जुड़ा है।[7] इस वचन में जैसा पौलुस ने इस्तेमाल किया, ''युग'' या ''संसार'' उस समय के किसी भी व्यक्ति के लिए है जो परमेश्वर के मार्ग का विरोधी था। ऐसा व्यक्ति टिका नहीं रह सकता था। इफिसुस के लोगों का जीवन ''ऐसा'' था ''जो अपने वर्तमान भ्रष्ट और खोटे प्रबन्ध वाले पूरे युग के साथ मेल खाता था जो मनुष्य जाति के पतन के कारण है और स्वर्ग के राज्य के विपरीत जो सदा तक रहेगा।''[8] इस तरह से जीना अपराधों और पापों के कब्जे में होना है।

आयत 2. शेष आयतें पौलुस परमेश्वर की मंशा के बाहर रहने वालों के विषय में तीन तथ्य ठहराता है। वे किसी ''आत्मा'' के अधीन चलते हैं जो ''अब'' उन में ''कार्य करता है'' अर्थात ''आकाश के अधिकार के हाकिम'' और वे ''आज्ञा न मानने वाले'' हैं।

आकाश के अधिकार के हाकिम किसे कहा गया है? इफिसियों की पुस्तक में पौलुस

ने उन शक्तियों की बात की जो मानवीय जीवों की भलाई और परमेश्वर की मंशा के विरुद्ध रहती है। 6:12 में उसने मसीही व्यक्ति की लड़ाई ''लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।'' इन शक्तियों के पीछे बुराई की ओर व्यक्तिगत शक्ति है जिसे ''शैतान'' (4:27; 6:11) और ''दुष्ट'' (6:16) कहा जाता है। बुराई की यह व्यक्तिगत शक्ति ''इस संसार के ईश्वर'' को कहा गया है (2 कुरिन्थियों 4:4)। ''आकाश के अधिकार का हाकिम'' शैतान है। ''हाकिम'' शब्द यूनानी संज्ञा शब्द *archōn* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''व्यक्ति या वस्तुओं के क्रम में पहला।''[9] वह राज्य के अधिकार में पहला है। ''अधिकार'' का अनुवाद *exousia* से किया गया है और इसका अर्थ आयत 2 वाली उन दुष्टात्माओं के संदर्भ में ''अधिकार'' है जिन पर शैतान शासन करता है। पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि शैतान आत्मिक क्षेत्र में मनुष्यजाति पर हमला करते हुए और उद्धार न पाए हुए लोगों पर कब्जा करते काम करता है।

यहां एक सवाल खड़ा होता है कि **आत्मा** किसे कहा गया है? क्या शैतान ''जो अब भी आज्ञा न मानने वाले हैं उन में काम करने वाली आत्मा'' है या क्या यह शब्द उस व्यक्ति की आत्मा के लिए है, जिसने अपने आपको शैतान को सौंप दिया है? बाद वाला अर्थ सही प्रतीत होता है। हो सकता है कि शैतान जो ''आकाश के अधिकार का हाकिम'' है, कि वह ''आत्मा'' हो, परन्तु यूनानी व्याकरण के मूल नियम इसके विरुद्ध हैं।[10] ''हाकिम'' कर्मकारक है जबकि ''आत्मा'' सम्बन्धकारक है। यूनानी व्याकरण में यदि ''आत्मा'' को ''हाकिम'' कहा गया है तो ये वही कारक होना चाहिए। ऐसा नहीं है इस कारण हम इसके विपरीत निष्कर्ष निकालते हैं कि शैतान को हम (1) ''आकाश के हाकिम'' और (2) ''आत्मा'' को उद्धार न पाने वालों पर शासन करने की बात कही गई है।

शैतान के प्रभाव में रहने के कारण, परमेश्वर को न जानने वाले लोगों में विद्रोही मन है। यदि किसी को ''प्रेमी आत्मा,'' ''दयालु आत्मा,'' या ''सच्ची आत्मा'' कहना हो तो हमें समझ आता है कि उस व्यक्ति के स्वभाव में प्रेम या दया या सच्चाई है। इसी प्रकार से यह लिखते हुए कि ''आत्मा जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है'' पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि उद्धार न पाए हुए लोगों के अन्दर अपने आप में एक आत्मा है जो उनसे ''आकाश के अधिकार के हाकिम'' को समर्पण करवाया। **आज्ञा न मानने वालों** उन्हें कहा गया है जो अवज्ञा में रहते हैं और उनका स्वभाव यही है। उन्हें ''की संतान'' कुछ उसी अर्थ में कहा गया है जिसमें याकूब और यूहन्ना को ''गरजन के पुत्र'' (मरकुस 3:17) कहा जाता था और बरनबास को ''शांति का पुत्र'' कहा जाता था (प्रेरितों 4:36)। जिस प्रकार से कड़े स्वभाव वाले व्यक्ति को ''गर्जन का पुत्र'' या प्रोत्साहन देने वाले को ''प्रोत्साहन का'' पुत्र कहा जा सकता है, उसी प्रकार से अवज्ञा में रहने वाला ''अवज्ञा का पुत्र'' है।

इस ''आत्मा'' के आज्ञा न मानने वालें में **कार्य करता** होने की बात कही गई है। ''कार्य'' यूनानी क्रिया शब्द *energeō* है जो किसी चीज़ के ''सक्रिय'' होने का संकेत देता है।[11] आज्ञा न मानने वालों में प्रभावी वाली यह आत्मा उनके मनों पर शैतान के प्रभाव के द्वारा सक्रिय थी। ये लोग ''आज्ञा न मानने'' से जुड़े हुए थे, जो यूनानी क्रिया *apeitheia* का अनुवाद है, जो सुझाव देता है कि वे ''वे न समझने वाले, न मानने वाले'' थे।[12] उन्होंने शैतान को अपने जीवनों पर

नियन्त्रण करने दिया था, वह सुसमाचार को ग्रहण करने को तैयार नहीं थे इस कारण उन्होंने इसे नहीं मानना था। जैसा कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 4:4 में कहा है, ''... जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह ... उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।'' शैतान के प्रभाव में मसीह की इच्छा के लिए उसके मन में एक आम अपमान था।

यह आयत जिस प्रकार से इफिसियों के लिए याद दिलाने वाली थी उसी प्रकार से हमारे लिए भी है कि मसीह को शैतान सहित, सब के ऊपर किया गया है। शैतान की शक्ति चाहे बहुत हद तक कम कर दी गई है और पौलुस द्वारा बताई गई शक्ति उनके अतीत की थी और शैतान अभी भी एक शक्तिशाली शत्रु है। वह आज्ञा न मानने वालों में कार्य कर रहा है और हमारे लिए खतरा बना हुआ है (4:27; 6:10-20)।

लालसा में रहना (2:3)

[3]इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे।

आयत 3. परमेश्वर की मंशा के बाहर रहने वालों का एक और विवरण दिया गया है। इफिसियों के ''पवित्र'' और ''मसीह यीशु में विश्वासी'' बनने से पहले वे **इन में** अर्थात ''आज्ञा न मानने वालों'' में शामिल थे, समुदाय के रूप में उन लोगों के बीच में रहते थे, जो आज्ञा न मानने में दृढ़ थे। **हम भी सब के सब पहले दिन बिताते थे** कहते हुए पौलुस ने अपने आपको इसी समूह में मिलाया। ''बिताते थे'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द *anastrephō* जिसका अर्थ है ''अपने व्यवहार को संचालित करना।''[13] पवित्र लोग किसी समय ''आज्ञा न मानने वालों'' के अनुसार ''अपने व्यवहार को संचालित करते थे'' जो पाप में इतना डूबे हुए थे कि वे पाप की ''संतान'' थे। वे **अपने शरीर की लालसाओं में दिन** बिताते थे। ''लालसाओं'' यूनानी संज्ञा शब्द *epithumia* का अर्थ ''दिल से चाहना, लालसा करना''[14] ऐसी इच्छा अच्छी या बुरी हो सकती है, निर्भर करता है कि संदर्भ क्या है। इस वचन में यह एक बुरी लालसा है क्योंकि यह ''शरीर'' से सम्बन्धित है।

पौलुस ने शरीर के कामों को कई बार मसीही व्यक्ति के नये जीवन में आत्मा के फल से अलग बताया (गलातियों 5:16, 24; रोमियों 7:5; 13:14)। ''शरीर'' (*sarx*) का अनुवाद है और केवल व्यक्ति के शारीरिक अस्तित्व के लिए ही ''नहीं बल्कि मनुष्य जाति के पाप पूर्ण होने और परमेश्वर के विरोध वेक्क दायरे के लिए है।''[15] जब तक व्यक्ति के ऊपर शरीर प्रभावी रहता है, तब तक वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करेगा (रोमियों 8:8)।

इफिसुस के लोग न केवल ''शरीर की लालसाओं में दिन बिताते'' थे बल्कि वे **शरीर, और मन की मंशाएं पूरी करते थे**। ''पूरी करते थे'' (*poieō*) ''करना, सम्पन्न करना, पूरा करना'' का बोद्ध देता है।[16] कृदंत वर्तमानकाल में है, इस कारण ये लोग आदतन कार्य में लगे हुए थे। ''मनसाएं'' के लिए यूनानी शब्द (*thelēma*) ''भावनाओं से उपजी लालसाएं'' का सुझाव देता है।[17] पौलुस ने उन लोगों की जो अपने पापपूर्ण जीवन में रहने के कारण के बजाय भावनाओं में बह गए थे, एक तस्वीर दिखाई। वह व्यक्ति जिस पर ''शरीर'' का कब्जा हो,

उसका ''मन'' (*dianoia*) भी भ्रष्ट होता है। *Dia* यह विचार देता है कि पौलुस द्वारा वर्णित इन लोगों की ''सोच'' उसी ''के द्वारा'' बनी थी जो कुछ वे कर रहे थे। उन्होंने जैसा वे जीवन बिता रहे थे वैसा जीने का पक्का निर्णय ले लिया था। शरीर की सोच आज्ञा तोड़ने वाली होती है। रोमियों 8:5-8 में पौलुस ने उनके लिए जो शरीर के अनुसार जीवन बिताते हैं मृत्यु में रहने और परमेश्वर के विरोधी होने की बात की।

क्रोध की संतान के रूप में पहचाने गए (2:3)

[3]और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।

आयत 3. आज्ञा न मानने का एक अन्तिम विवरण दिया गया है। जिस प्रकार से इफिसुस के विश्वासी किसी समय ''आज्ञा न मानने वाले'' थे, पौलुस ने कहा कि वे भी **क्रोध की सन्तान** थे। ''क्रोध'' यहां पर स्पष्ट रूप में परमेश्वर के क्रोध को कहा गया है, जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोही जीवन बिताने वाले सब लोगों के योग्य हैं (रोमियों 1:18)। परमेश्वर का स्वभाव पूर्ण रूप में पवित्र है और वह पाप की स्वीकृत कभी नहीं दे सकता। इसके अलावा परमेश्वर की पवित्रता पाप पर उसके दण्ड की मांग करती है (रोमियों 6:23)। जितने लोग पाप में रहते हैं वे सभी सच्चाई से परमेश्वर के इस न्याय के हकदार हैं। यहूदियों के लिए पौलुस ने लिखा, ''पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिए, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है'' (रोमियों 2:5)। हर प्रकार का पाप परमेश्वर की पवित्रता के अनुरूप है और परमेश्वर का दण्ड पाप के ऊपर उण्डेला जाने वाला उसका न्याय है। पौलुस ने जब **और और लोगों को** समान शब्दों का इस्तेमाल किया तो वह मसीह में और मसीह के बाहर रहने वाले सभी लोगों की ओर ध्यान दिला रहा था जो परमेश्वर के धर्मी क्रोध के हक्कदार हैं। परन्तु जो लोग मसीह में हैं (चाहे किसी समय में मसीह से बाहर और परमेश्वर के दण्ड के अधीन थे) अब ''[मसीह] के द्वारा परमेश्वर के क्रोध से बचते'' हैं (रोमियों 5:9)।

मनुष्य जाति **स्वभाव ही से** परमेश्वर के क्रोध और दण्ड के अधीन है। *Phusis* के एक अनुवाद से ली गई यह अभिव्यक्ति गलातियों 2:15 में भी मिलती है जहां पौलुस ने यहूदियों के ''स्वभाव से यहूदी'' होने की बात की। ''स्वभाव से यहूदी'' लोग जन्म से यहूदी थे न कि बाद में उन्होंने यहूदी होना चुना था। इस वचन में अर्थ यह है कि जन्म से हम में पाप करने की प्रवृति वाला आदम का मानवीय स्वभाव होता है। परन्तु हम आदम के अपराध के दोष को लेकर पापी नहीं जन्मे थे, जैसा कि कुछ भ्रमित शिक्षा देने वाले लोग बताते हैं। यहेजकेल 18:20 में परमेश्वर ने कहा, ''जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा ...।'' वह इस अन्तर को इस से बढ़कर स्पष्ट कैसे कर सकता है?

क्या मसीह सब के लिए मरा? बेशक! तो फिर सबका उद्धार क्यों नहीं होता है? इसका उत्तर यह है कि सभी लोग सुसमाचार की आज्ञा को नहीं मानते। रोमियों 5:19 में पौलुस ने कहा, ''क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।'' क्रूस पर मसीह की मृत्यु के समय हर व्यक्ति को

सम्भावित धर्मी बना दिया गया था। जब व्यक्ति सुसमाचार की आज्ञा को मानता है तो इसे *वास्तव में* धर्मी बना दिया जाता है। उसी प्रकार से हर व्यक्ति में आदम का मानवीय स्वभाव और वह *सम्भावित रूप में* पापी है। परन्तु जब तक वह अपने कामों के ज़िम्मेदार नहीं होते और व्यक्तिगत रूप से पाप नहीं करते, तब तक हम *वास्तव में* पापी नहीं बनते। हम सब में आदम का स्वभाव है, इस कारण रोमियों 3:23 के अनुसार हम पाप करते हैं। पाप करने की यह पसंद हमें ''क्रोध की संतान'' बना देती है और कोई भी ज़िम्मेदार व्यक्ति इस से बचा नहीं रहता।

इस भाग में पौलुस ने इफिसियों का चित्रण उनके ''पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी'' बनने से *पहले* किया (1:1)। उसका यह विवरण उस समय और अब के परमेश्वर की मंशा के बाहर रहने वाले सब लोगों पर लागू होता है।

प्रासंगिकता

क्रूस (अध्याय 2)

मसीह के क्रूस पर प्रचार करने में इस्तेमाल के लिए इफिसियों 2 एक जबर्दस्त वचन है। मसीह के पुनरुत्थान के साथ मिलकर क्रूस के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। मानवीय दृष्टिकोण से क्रूस एक पूर्ण असफलता है। यह एक जवान यहूदी की कहानी है जो लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व एक बाहरी रोमी बस्ती में रोमी क्रूस पर मरा था। परन्तु परमेश्वर के दृष्टिकोण से क्रूस हर विजय से बढ़कर है। क्रूस वह वेदी है, जहां पर मसीह के बलिदान में परमेश्वर ने खोई हुई मनुष्यजाति के लिए स्वर्ग के द्वार खोल दिए।

क्रूस अनन्तकाल से परमेश्वर के मन में था (देखें इफिसियों 3:10, 11; प्रकाशितवाक्य 13:8)। यह उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य के बीच का बैंजनी धागा है। हमारे लिए मसीह के बलिदान को हाबिल के मेमने (उत्पत्ति 4:4), अब्राहम के इसहाक को बलिदान करने (उत्पत्ति 22:1-18), फसह के मेमने (निर्गमन 12:3-14), खम्बे पर मूसा के सांप (गिनती 21:5-9), यशायाह के दुखी दास वाले भाग (यशायाह 53) और इस्राएल के सभी बलिदानों में दिखाया जाता है।

परमेश्वर द्वारा क्रूस की मंशा की गई, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी की गई, यीशु द्वारा उम्मीद की गई और प्रेरितों द्वारा इसका प्रचार किया गया। क्रूस का संदेश ही खोए हुए संसार की एकमात्र आशा है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

क्रूस के नीचे—खोई हुई मनुष्यजाति (2:1-3)

''अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे'' (2:1); ''सब ने पाप किया है'' (रोमियों 3:23); ''तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है'' (यशायाह 59:2): पाप लोगों को परमेश्वर से अलग करता है, और परमेश्वर से अलग होने का अर्थ आत्मिक मृत्यु है। ''मृत्यु'' का मूल अर्थ ''अलग होना'' है (देखें याकूब 2:26)। पाप में रहने वाले लोगों के पास आत्मिक जीवन नहीं है और वे केवल अनन्त मृत्यु की ही उम्मीद कर सकते हैं (रोमियों 6:23)।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट 'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 60. [2]जॉर्ज वी. विग्रेम, द *इंग्लिशमैन 'स ग्रीक कन्कोर्डेंस ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* 9वां संस्क. (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1903), 33-34. [3]वुएस्ट 60. [4]वारेन बेकर, सम्पा., द *कम्पलीट वर्ड स्टडी ओल्ड टैस्टामेंट* (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1994), 2348. [5]वुएस्ट, 60-61. [6]स्पायरस जोडिएट्स, संस्क., द *कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1992), 882-83. [7]वही, 929. [8]आर. सी. एच. लेंसकी, द *इंटरप्रिटेशन ऑफ सेंट पॉल 'स एपिस्टल्स टू द गलेशियंस, टू द इफिसियंस एंड टू द फिलिपियंस* (कोलम्बस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: अगस्बर्ग पब्लिशिंग हाउस 1961), 408. [9]वूऐस्ट, 62. [10]द *एक्सपोज़िटर 'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:284 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''ए एपिस्टल टू द इफिसियंस।''

[11]वुएस्ट, 63. [12]वही। [13]वही। [14]वही। [15]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 98. [16]वुएस्ट, 64. [17]वही।